REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

बाल मनोविज्ञान- शेखर एक जीवनी के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. जयकुमारी के
असोसियेट प्रोफसर , एम. जी. कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम.

भारतीय समाज एक ज़माने में परिवार पर अधिष्ठित था। लेकिन आज के अणु परिवार में बच्चे भी एक मुख्य अंग है लेकिन उन्हें केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही प्रवेश कराके पालते हैं। उनके मन कोई नहीं देखते हैं। उनके शंकाओं का समाधान देने केलिए समय किसी के पास नहीं है।

बच्चों के मन में कई शंकाएँ हैं। जैसे शेखर के बचपन में उनकी शिशु मानस की ग्रन्थियों में किस प्रकार आन्तरिक संघर्ष परिचालित होता था और यदि फ्रायड को मान्य कर जाये तो उनके चेतन मन से होनेवाली कार्य किस प्रकार उनके अपने अन्तर चेतन और दमित चेतन से कठपुतली की तरह नियंत्रित होकर प्रप्रकट होते थे साथ ही किसप्रकार उनके व्यक्तित्व में सामाजिक संदर्भ की दिशा आंकी जाती है- ये सारी बातों हरेक बच्चे के जीवन में परखकर देखनी चाहिए। शेखर के जीवन की कुछ घटनाएँ जो उसके शिशुमन को उद्घाटित करती है मूलत: आज के बच्चे के मन का दर्पण बिंब है।

आज की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षकों से भी शेखर आश्वस्त नहीं दिखाई देता है। पिता यह कहने पर की पढना है कि नहीं तो वह ऐसा कहता है कि पढूँ। पढान्वाले कोई है। शेखर के पिता क्रुद्ध हो उठते हैं। शेखर को ऐसा लगता है कि न्याय कही नहीं है। वह अन्याय के आगे झुकने को भी तैयार नहीं होता। वह हर बात तो अपनी तर्क की..... पर कसकर देखना चाहता है और देखता है। शेखर स्कूल तो जाने लगता है, लेकिन..... के प्रति उसमें अनास्था का भाव बना ही रहता है। वह स्कूल जाना बन्द कर देता है। न जाने से उसमें एक शक्ति पायी, जो वहाँ नहीं मिलता है। उसने अकेले होना की ..... । स्कूलों में टाइप बनते हैं। वह बना- व्यक्ति।

शेखर विद्रोही था। लेकिन वह स्वयं विद्रोही नहीं बना था। परिस्थितियों ने उन्हें विद्रोही बना दिया था। क्योंकि विद्रोही बनते नहीं उत्पन्न होते हैं। शेखर के विद्रोहों के पीछे परिस्थितियों के अतिरिक्त शेखर अहंभाव भि सक्रिय दिखाई पडता है । डॉ. नगेन्द्र के मत इस प्रकार प्रकट किया कि "पिता की कठोरता को भी उसने जो एक भव्य रूप दिया, उसका एकमात्र कारण यही है कि उसके अपनी गौरव भावना और कठोरता के नीचे ऐसा कुछ अवश्य मिलता है जो बडे अभिमान से

उसके अंह को दुलराता है। माँ को उसके प्रति स्नेह नहीं था, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु वह बेचारी उसकी यह माँग पूरी करने में असमर्थ रही। उसने जीवन भर उन्हें क्षमा नहीं किया।"1

शेखर सदा डांट- फटकार ही तो मिली, उसे वर्जनाओं का शिकार ही तो होना पडा। प्यार तो संभंवत: उसे जैसे मिला नहे। शेखर वय सन्धि की उम्र में आया तो वह सरस्वति के अतिरिक्त उसके जीवन में कुछ नारियाँ आई ओर कुछ नकुठ प्रभाव डालकर दूर हो गई। मित्र प्रतिभा तितली पकडी आई और तितली सी ही फुरी हो गई। शारदा, तपोदिल से आक्रांत शांति, मणिक और शशि से शेखर को नारी जीवन की विभिन्नता और करुणता मिली। वय सन्धि प्राप्त युवक युवति को समाज समझ नहीं पाता और उनके प्रति सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता है। ऐसे समय उनकी बोलने चालने उठने बैठने आदि अनेक बातों में त्रुटियाँ देखकर क्षोभ होता है। यही आज की अवस्था है।

बच्चों को पाला-पोसा करना मानवीय कर्म है लेकिन जब हम कहते हैं कि बच्चों के मनुष्य बनाना माता-पिता की जिम्मेदारी है, तो इसमें यह भाव आता है कि बच्चे मनुष्य बनाये हैं। मनुष्य बनाते समय उसके बाल्य जीवन के हरेक पयेलू पर इतना ध्यान देना चाहिए कहीं गलती न आये। बाल्यकाल तो शंकाओं का समय है। हर शंका का समाधान खुले नहीं पर देना है। जन्म, मरण, माता-पिता के संबन्ध हर तरह के शंका होता है ।2 उसका ठीक ठीक उत्तर देना ही है। अधिकांश माँ-बाप इस केलिए अममर्थ है। कभी यह असमर्थ बच्चों को बुरी शस्ते पर चलने लायक बनाते हैं। शंकाओं का दबाना न चाहिए।

मध्यवर्गीय माता-पिता बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी के बारे में तीन तरह से सोचते हैं। एक सोच यह है कि हमारे माता-पिता ने जदिस तरीके से हमको पाला-पोषण में वही तरीका अपनाया है चाहै वह तरीका बच्चे को अपनी हर उचित माँग को पूरा करनेवाला आज्ञाकारी बच्चा बनाने केलिए दंड और पुरस्कार देनेवाला तानाशाही तरीका ही ..... ने हो। दूसरी सोच यह है कि हमारे साथ जो बचपन में हुआ, वह बिलकुल अन्यायपूर्ण है, और उसके कारण जो हम पर बीती- चाहे वह तरीका बच्चों की हर उचित अनुचित माँग ..... करके बच्चों के बिगजने के साथ-साथ खुद को बिगड़ लेने, मसलन, भ्रष्टाचार से पैसा.... नावाला बन जानेवाला तरीका ही क्यों न हो य़य तीसरी सोच यह है कि हम अब तक जो क्रुध होता आया है, उससे अलग हटकर अपने बच्चों को इस तरह पालें कि वे आज की ..... दुनिया में दूसरों को पीछे छोडकर आगे निकल सकें सफल हो सके और हम कुछ बनना चाहते थे और नहीं बन पाये, वह हमारे बच्चे बन सकें। वास्तव में ये तीनों के माता पिता बहुत ही कन्फ़्यूज़्ड़ है और न तो बच्चों के बारे में कुध जानते हैं, न माता पिता की जिम्मेदारी के बारे में कुछ जानते हैं कि आज की में क्या हो रहा है और क्या किया जाना चाहिए।

पहली बात यह है कि मध्यवर्ग के बहुत से लोग गरीब माता पिताओं को गैर मानते हैं जो उनका विचार से बच्चों की जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ होते हुए भी करते चले जाते हैं। उनके विचार से गरीब लोग ऐसी अमानुषिक परिस्थितियों में.... स्वयं एकदम अमानुषिक हो जाते हैं और

अपने बच्चों को कभी मनुष्य नहीं बना यय उनका यह विचार गलत और खतरनाक है। वे खुद आदर्श माता-पिता समझते हैं, मगर खुद अपने बच्चों के साथ अव्यवहार ही करते हैं। बच्चे को आया, नौकर या ऐसे स्कूल के हवाले कर देते हैं, जो बच्चे की देख भाल कर सके। इसप्रकार का एक उदाहरण है- एक छोटे से परिवार में माता - पिता और दो बच्चे हैं। बडा लडका छह साल का और छोटा दो - ढाई वर्ष का। माता-पिता दोनों डॉक्टर हैं। सुबह नौ बजे जाते हैं और सच को आठ-नौ बजे लौटते हैं। बच्चों केलिए उन्होंने आया ..... हुई थी। एक दिन वह दोनों बच्चों को घर में बंद करके चली गयी और लौटा नहीं । बडे बच्चे ने अपने माता- पिता को फोन पर सब बताया। तो उन्होंने उसे छोटे भाई का ख्याल रखने तथा रसोई में से खाने की चीज़ लेने के आदेश देकर कहा कि हम शाम तक आ जाएंगे। बच्चों को बंद घर में सुरक्षित मानकर उन्होंने ऐसा कहा होगा। अब जो आया रखी है, वह बच्चों के साथ - तो रहती है, पर बचते अधूरे कपडे पहने, बाल पिखरे और नंगे पैर बाहर खेलते हैं। आस पास के दादियों नानियों की पीढी उनकी माँ को कोसती है कि उसे काम छोडकर अपने बच्चों के साथ रहना चाहिए। लेकिन मम्मी- पप्पा की पीढी के ज़्यादतर लोगों का मानना है कि यही तो उनकी काम करने और पैसा कमाने की उम्र है। आखिर वे तो इन बच्चों के लिए तो कमाते रहे हैं। छोटे बच्चे कहते हैं कि इन दोनों के बडे मजे हैं। कोई रोक-टोक नहीं जो मर्जी करो। मध्यवर्गीय परिवार की आज की अवस्था यही है। आगे चलने पर बच्चे यही स्वातंत्र्य चाहते हैं। उन पर नियंत्रण रखना न चाहते हैं। माँ- बाप के आँखें तभी खोलते हैं जब ये बच्चे बुरी तरह से बिगडते हैं।

आज इंटरनेट बडे काम की चीज़ है। लेकिन उसरा इस्तेमाल कैसे बेहुदा तरीकों से होता है। दो अजनबी इ-मेल पर मिल रहे हैं और कैमरे के ज़रिए एक- दूसरे को अपनी तस्वीरें भेज रहे हैं। एक अजनबी इन्टरनेट पर एक लडकी से कह रहा है कि अपने कपडे उतारो और वह उतार रही है। फिर खबरें जाती है कि किसी लडकी की नंगी तस्वीरें दूसरों को भेजा जा रही है। और यह काम बच्चे कर रहै हैं। यही आज की अवस्था है। हमारी संस्कृति इस प्रकार गिर गयी है। वैदिक संस्कार पर गर्व करनेवाले हम इस प्रकाल बन गये हैं हर बच्चे को ठीक तरह से पाला- पोसा करना माता- पिता की जिम्मेदारी है। यही इसका निष्कर्ष है। ज़्यादतर माता पिता अपनी इस जिम्मेदारी को समझते भी वे चाहते हैं कि उनके बच्चे स्वस्थ रहें दीर्घायु हों, अच्छी शीक्षा पायें, बडे होकर अच्छा कमायें- खायें और सुखी रहें। इसके लिए वे यथासंभम सब कुछ करते हैं।

आजकल के बच्चे अपने आप में ही स्वतंत्र और संपूर्ण मनुष्य है और शिक्षा उसे सचेत, सामाजिक, सुसंस्कृत मनुष्य बनानेवाली चीज़ है। अमर्त्य सेन ने विकास को स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित किया है और उसकी व्याख्या समता, क्षमता और जीवम की गुणवत्ता के रूप में की है। इसी दृष्टि से देखा जाये, तो बच्चों की जिम्मेदारी केवल माता-पिता पर भी निर्भर है।

मध्यवर्गीय परिवार के माँ-बाप अपने बच्चों की शिकायत करते हैं कि बच्चे बिगड जाते हैं, वे हाथ से निकल जाते हैं, बडों की कोई बात नहीं मानते हैं, अमीरों के बच्चों की नकल करते हैं। उन्हीं

का सा खाना- पहनना चाहते हैं। स्कूल में पढने तक जो बच्चे बडे अनुशासन में रहते हैं, वे कॉलेज में प्रवेश करते ही उच्छृखल हो जाते हैं। उन्हें कार चाहिए या मोटर बाइक, लारी जेब - खर्च चाहिए। अपने जीवन में माता -पिता के भी कुछ जिम्मेदारियाँ होती है। बच्चों के देखभाल में, उनके व्यक्तित्व विकास में, उसे समझावे में, किशोरावस्था के बच्चों के शंका दूर करने में भारी दायित्व है। यौन संबन्धित अनेक शंकाएँ होती है जिनका पूर्ण समाधान उन्हें मिलना ही चाहिए। नहीं तो अनर्थ बन जाएगा। घर से उत्तर न मिलें तो वह बाहर खोजने जायेंगे। वही अनर्थ होता है।

संदर्भ

1. विचार और अनुभूति - डॉ. नगेन्द्र **148**
2. शेखर एक जीवनी - अजेय प्रथम भाग **123**